# खुन्नस

(चीन की लोककथा)

आलोक श्रीवास्तव

आदित्य श्रीवास्तव

आशा श्रीवास्तव

# खुन्नस (चीन की लोककथा)

आदित्य श्रीवास्तव

आलोक श्रीवास्तव

आशा श्रीवास्तव

# खुन्नस

बहुत समय पहले की बात है। लुआनचुआन सियन[1] (栾川县) में वांग नाम की एक विधवा अपने एकलौते लड़के मिंग-ली के साथ रहा करती थी। वे दोनों बहुत ही गरीबी में दिन गुजारा करते थे। एक दिन मिंग-ली जैसे ही सुबह सवेरे काम की तलाश में घर से बाहर निकला तो उसकी विधवा माँ ने उससे कहा ‘हम कल क्या खायेंगे, इस बात का मुझे जरा भी अंदाजा नहीं है!’

“ईश्वर ने मुंह दिया है तो पेट भी भरेगा। मुझे कहीं न कहीं से कुछ पैसे मिल ही जायेंगे,” खुश होने की कोशिश करते हुए,

---

[1] लुआनचुआन सियन (栾川县)—चीन के हेनैन (河南) प्रांत में स्थित एक जगह

लड़के ने जवाब दिया, हालांकि दिल ही दिल में वह आशंकित था कि वह किस दिशा में जाएगा।

सर्दियां हमेशा से ही मुश्किल होती आयी हैं: भारी बर्फबारी और बहुत ही तेज सर्द हवाएं सर्दियों के लिए आम बात है। वांग के घर ने सर्दियों को बुरी तरह से सहा था। घर की छत अंदर की ओर धंस गयी थी, भारी मात्रा में गिरने वाली बर्फ ने इसे झुका दिया था। इसके बाद आये एक तूफान ने एक दीवार को बाहर ढहा दिया था; पूरी रात कड़ाके की सर्द हवा के सामने असहाय पड़ा रहने से मिंग-ली को निमोनिया हो गया था। बीमारी के लम्बे दिनों में दवाओं के लिए अतिरिक्त पैसे खर्च हुए थे। उनकी सारी छोटी बचतें बहुत जल्द ही खत्म हो गयीं थीं, और जिस दुकान पर मिंग-ली काम किया करता था उसके मालिक ने किसी दूसरे लड़के को मिंग-ली की जगह पर नौकरी दे दी थी। आखिरकार, बीमारी के बाद जब वह बिस्तर से उठा तो कठिन श्रम करने के लिए वह बहुत ही कमजोर था और अड़ोस-पड़ोस के किसी भी गाँव में उसके लिए कोई काम मिल पाना मुश्किल जान पड़ता था। देर रात घर लौटने पर, वह कोशिश करता था कि हिम्मत न हारे, लेकिन उसका दिल दुःख की गहरी पीड़ा महसूस करता था

कि वह कैसा अभागा लड़का है जो अपनी माँ को खाने और कपड़े की तंगी सहते हुए देखता है।

अगले दिन काम की तलाश में मिंग-ली के जाने के बाद उसकी विधवा मां ने कहा "ईश्वर इस नेक दिल लड़के को सुख-शांति दे! किसी माँ को इससे अच्छा लड़का शायद ही कभी मिला होगा। मैं उम्मीद करती हूँ कि वह सही कहता है, ईश्वर हमें खाना देगा। पिछले कुछ सप्ताहों से हालात कितने ज्यादा बदतर हो गये हैं; ऐसा जान पड़ता है मानो मेरा पेट किसी धनवान आदमी के दिमाग जितना ही खाली हो गया है। अरे, अब तो चूहों ने भी हमारी झोंपड़ी में आना छोड़ दिया है, और यहाँ बेचारी बिल्ली माओ के लिए कुछ भी नहीं है, जबकि बूढ़ा कुत्ता बाओ भूख से लगभग मरने-मरने को है।"

जिस समय बूढ़ी विधवा अपने और अपने पालतू जानवरों के दुःख को खुद से बड़बड़ा रही थी, उसकी टिप्पणियों के जवाब में एक कोने से—जहाँ ये दोनों भूखे जानवर आपस में सिमट कर दुबके हुए बैठे थे ताकि खुद को गर्म रख सकें—एक दयनीय म्याऊं की आवाज और एक जर्जर भौंकने की आवाज आयी।

इसके तुरंत बाद गेट पर तेज आवाज में एक दस्तक हुयी। विधवा वांग ने आवाज दी, “अंदर आ जाओ”। वह चकित हो गयी जब उसने देखा कि एक गंजा भिक्षु उसके दरवाजे पर खड़ा था।

यह सोचकर कि आगन्तुक खाने की तलाश में आया था, विधवा वांग ने कहा, “मुझे खेद है, लेकिन आपको देने के लिए हमारे पास कुछ नहीं है। बीते दो सप्ताहों से हम लोग बचा-खुचा खाना खाकर गुजारा कर रहे हैं और अब हम केवल उन यादों के सहारे जी रहे हैं जो हमें उस समय की याद दिलाती हैं जब मेरे लड़के के पिता जीवित थे और हम खुशहाल जिंदगी बिताया करते थे। हमारी बिल्ली बहुत तगड़ी हुआ करती थी इतनी कि वह छत पर नहीं चढ़ सकती थी। और अब उसे देखिये! आप देख सकते हैं, वह कितनी दुबली हो गयी है। नहीं, मुझे अफ़सोस है, भिक्षु

महोदय, मैं आपकी मदद नहीं कर सकती हूँ परन्तु आप हमारे हालातों को देख सकते हैं।"

"मैं दान मांगने के लिए नहीं आया था," सपाट-चिकनी दाढ़ी वाले उस गंजे भिक्षु ने बूढ़ी विधवा की तरफ दया भरी दृष्टि डालते हुए कहा, "बल्कि मैं तो इसलिए आया था, ताकि मैं तुम्हारी मदद कर सकूं ...मैं तुम्हारी मदद करूंगा! देवताओं ने तुम्हारे निष्ठावान पुत्र की लम्बी प्रार्थनाओं को सुन लिया है। वे उसे सम्मानित करना चाहते हैं उन्होंने देखा है कि अपनी बीमारी के बाद से किस तरह से तुम्हारे लड़के ने तुम्हारी सेवा की है, और अब, जब वह पूरी तरह से टूट चुका है और काम करने में असमर्थ है, उन्होंने उसके गुण को पुरस्कृत करने का निर्णय लिया है। इसी प्रकार से तुम भी एक बहुत ही अच्छी माँ साबित हुयी हो और इसलिए अब तुम उस तोहफे को स्वीकार करो जिसे मैं तुम्हारे लिए लाया हूँ।"

भिक्षु के कहे शब्दों को सुन कर श्रीमती वांग को अपने कानों पर मुश्किल से ही यकीन हुआ और उसने हिचकिचाते हुए कहा, "क्या कहा आपने?.. आपके कहने का मतलब क्या है?

कहीं आप हमारी बदकिस्मती का मजाक उड़ाने तो नहीं आये हैं?”

“बिलकुल भी नहीं। यहाँ मेरे हाथ में एक सुनहरा भृंग है जिसमें ऐसी जादुई ताकत है जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकती हो। मैं इसे तुम्हें देने आया हूँ, ‘टूडी गोंग[2](土地)’ देवता की तरफ से यह तोहफा संभालो।”

“हाँ, इसे बेच कर एक अच्छी धनराशि मिल जाएगी,” जेवर को करीब से देखते हुए श्रीमती वांग ने बुदबुदाकर कहा, “और इससे हमें कई दिनों के खाने के लिए बाजरा मिल जायेगा। धन्यवाद, अच्छे भिक्षु, आपकी दयालुता के लिए आपका धन्यवाद।”

---

[2] टूडी गोंग (土地)—चीन के भूमि देवता, इनका मन्दिर चीन के हर गाँव में मिल जाएगा। इन्हें किस्मत और सद्‌गुणों का देवता माना जाता है। सूखे और अकाल के समय में लोग इन्हीं की शरण में जाते हैं। इनकी छवि के रूप में एक बूढ़े आदमी की प्रतिमा होती है जो काले रंग या सोने की टोपी पहनती है और लाल या पीले रंग का लबादा पहनती है। इनके दाहिने हाथ में लकड़ी की एक छड़ी और बायें हाथ में सोने की शिला होती है।

“लेकिन ध्यान रखना, इस सुनहरे भृंग को तुम किसी भी कीमत पर मत बेचना, क्योंकि इसमें वह ताकत है जो पूरी जिन्दगी तुम्हारा पेट भर सकती है।”

चौंकाने वाले इन शब्दों को सुनकर विधवा मुंह बाए भिक्षु का चेहरा देखती रही और फिर बोली, “ओह? वाकई?”

“हाँ, तुम्हें मुझ पर संदेह नहीं करना चाहिए, बल्कि अब मैं जो तुम्हें बताने जा रहा हूँ उसे तुम ध्यानपूर्वक सुनो। जब भी तुम्हें खाने की इच्छा हो, उस समय तुम्हें केवल इतना करना है कि तुम इस भृंग को ले जाकर एक केतली उबलते पानी में डाल देना और जो कुछ भी खाने की तुम्हें इच्छा हो उसका नाम लगातार लेती जाना। तीन मिनट बाद जब तुम अपने बर्तन के ढक्कन को हटाओगी तो तुम्हें तुम्हारा गर्मागर्म खाना तैयार मिलेगा और यह खाना इतने अच्छे ढंग से पका होगा कि शायद ही कभी तुमने इससे अच्छा पका हुआ खाना खाया होगा।”

“क्या मैं इसे अभी आजमा सकती हूँ?” विधवा ने उत्सुकता से पूछा।

“मेरे यहाँ से जाते ही तुम इसे आजमा सकती हो।”

भिक्षु के जाते ही विधवा ने दरवाजे को बंद किया, जाकर तेजी से आग जलाई और एक केतली में पानी भरकर उसे आग पर चढ़ाया, इसके बाद उसने भिक्षु के दिए सुनहरे भृंग को गर्म पानी में डाल दिया और इन शब्दों को लगातार कहने लगी:

"बाओजी (包子)[3], बाओजी, मेरे पास आओ,

मैं उतनी पतली हो गयी हूँ जितनी हो सकती हूँ,

बाओजी, बाओजी, गर्मागर्म बाओजी,

बाओजी, बाओजी, बर्तन में भर जाओ बाओजी।"

क्या ये तीन मिनट कभी नहीं बीतेंगे? क्या भिक्षु ने सच कहा था? विधवा के उत्तेजित दिमाग में ये सवाल गूँज रहे थे तभी केतली के भीतर से भाप के बादल बाहर उठने लगे। ढक्कन हटा दिया गया! वह अब और इन्तजार नहीं कर सकती थी। अजूबों का अजूबा! उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था, पूरा का पूरा बर्तन कगार तक बाओजियों से भरा हुआ

---

[3] बाओजी (包子)—यह भाप में पकायी गयी एक पावबन होती है जिसे गोश्त भरकर बनाया जाता है।

था। जो उबलते हुए पानी में ऊपर नीचे नाच रही थीं। इससे बढ़िया और स्वादिष्ट बाओजी उसने अपनी जिन्दगी में पहले कभी नहीं खायी थी। वह उन बाओजियों को तब तक खाती गयी जब तक उसका लोलुप पेट पूरी तरह से भर नहीं गया, और इसके बाद उसने इसे बिल्ली और कुत्ते को भी तब तक खिलाया जब तक कि बाओजियों से उनका पेट फटने की हद तक भर नहीं गया।

घर के दरवाजे के बाहर जाकर, लेटते समय कुत्ते बाओ ने बिल्ली माओ से कहा, “आखिरकार खुशकिस्मती हमारे पास आ गयी। मुझे नहीं लगता है कि खाने की तलाश में अब एक और सप्ताह मुझे इधर-उधर भागना होगा। मैं नहीं जानता हूँ कि अभी क्या हुआ था, लेकिन इस बारे में ईश्वर से प्रश्न करने का कोई औचित्य नहीं है।”

श्रीमती वांग यह सोचकर ख़ुशी से नाच उठी थीं कि जब मिंग-ली वापस आएगा तब वह उसे दावत देंगी।

“मिंग-ली, हमारी खुशकिस्मती पर कितना आश्चर्य चकित होगा—और यह सब उसकी उन अच्छाइयों के कारण है जो उसने अपनी इस बूढ़ी माँ के साथ की हैं।”

जब मिंग-ली वापस आया, उस समय उसके माथे पर चिंता के काले बादल मंडरा रहे थे, उसकी बूढ़ी विधवा मां अपने लड़के के चेहरे पर लिखी इस हताशा को बहुत ही साफ़ देख सकती थी।

“आओ, आओ, बच्चे!” उसने उत्साह से चिल्लाते हुए कहा, “अपना मुंह धो लो, मैं तुम्हारे लिए खाना बनाकर लाती हूँ। मेरे प्रति तुम्हारी निष्ठा को देखकर देवताओं ने तुम्हें पुरस्कृत किया है, और आज हम पर उन्होंने बहुत बड़ी कृपा की है।” ऐसा कहकर, उस बूढ़ी विधवा ने सुनहरे भृंग को उबलते हुए पानी में डाला और आग तेज कर दी।

मिंग-ली ने सोचा खाने की कमी के कारण उसकी माँ पूरी तरह से पागल हो गयी है, वह गंभीर मुद्रा में एकटक अपनी माँ को घूरता रहा। इस बदहाली में क्या कोई चीज बेहतर हो सकती थी? मिंग-ली के जेहन में आया कि उसे अपने पिता की आखिरी निशानी गूकीन[4] (古琴)—जिसे उसके पिता उसके लिए मुख्य शहर हेनैन (河南) से लेकर आये थे—को

[4] गूकीन (古琴)—सात तारों वाला एक चीनी वाद्ययंत्र

कुछ पैसों के लिए क्या बेच नहीं देना चाहिए ताकि वह अपनी माँ के लिए कुछ मोटा अनाज खरीद सके? बाओ, मिंग-ली के हाथों को बड़े ही सांत्वना भरे ढंग से चाट रहा था, मानो कहना चाह रहा हो, “खुश हो जाओ, मालिक, किस्मत हम पर मेहरबान है।” माओ छलांग लगाकर एक तख्त पर बैठ गयी और एक आरा-मशीन की तरह घुरघुराने लगी।

मिंग-ली को ज्यादा देर तक इंतजार नहीं करना पड़ा। लगभग पलक झपकते ही उसे अपनी माँ की आवाज सुनाई दी, “खाने के लिए आकर बैठ जाओ, बेटा, और इन गर्मागर्म बाओजियों को खाकर इनका लुफ्त उठाओ।”

क्या उसने सही सुना है? कहीं उसके कानों ने उसे धोखा तो नहीं दिया था? नहीं, वाकई वहां मेज पर लकड़ी की एक बड़ी थाली में सूअर के मांस से भरी स्वादिष्ट बाओजियां रखी थीं, जो मिंग-ली को इस दुनिया में किसी और चीज से कहीं ज्यादा प्रिय थीं, बेशक रूप से उसकी माँ को छोड़कर।

“खाओ और कोई सवाल मत पूछो,” विधवा वांग ने अपने लड़के की तरफ देखते हुए कहा, “जब खाकर तुम संतुष्ट हो जाओगे तो मैं तुम्हें हर एक चीज के बारे में बताऊंगी।”

"मुझे जोरों की भूख लगी है।" मिंग-ली ने कहा और अगले ही पल मिंग-ली के हाथों की क्वाइज़ी[5](筷子) में बाओजी फंसी हुयी थी जिसे वह जल्दी-जल्दी खा रहा था। वह काफी देर तक ख़ुशी-ख़ुशी उन बाओजियों को खाता रहा, जबकि इस दौरान उसकी माँ उसे निहार रही थी। माँ का दिल अपने बेटे को इस प्रकार से खाते हुए देखकर ख़ुशी से लबालब भर उठा था, आखिर में मिंग-ली ने अपना खाना खाकर डकार ली।

---

[5] क्वाइज़ी (筷子)—यह चीनी काँटा होता है, जिसे चॉपस्टिक कहते हैं। इसे सीधे हाथ के अंगूठे और अंगुलियों में फंसा कर खाने के टुकड़े को उठाकर खाया जाता है।

श्रीमती वांग बड़ी बेसब्री से इस बात का इन्तजार कर रही थीं कि कब मिंग-ली का खाना पूरा हो और कब वह उसे इस अद्भुत राज से वाकिफ कराए।

"इसे देखो, मेरे बेटे!" श्रीमती वांग ने चहकते हुए कहा, "देखो, मेरे इस खजाने को देखो!" और ऐसा कहते हुए उसने मिंग-ली के सामने अपने उस सुनहरे भृंग को रख दिया।

"आह? यह क्या है?" मिंग-ली ने कहा।

"यह वह खजाना है जिससे हमारे खाने की कमी की समस्या दूर हो जायेगी," श्रीमती वांग ने मुसकुराते हुए कहा, "आज दोपहर को जो कुछ यहाँ पर घटित हुआ था वह किसी परी कथा से कम नहीं था, बस फर्क इतना था कि यहाँ परी की जगह एक गंजा भिक्षु आया था। और यह सुनहरा भृंग उसने ही मुझे दिया था, और अब उस राज की बारी आती है जो हमारे लिए बेशकीमती है।"

मिंग-ली ने उस जेवर को अनमने ढंग से अपने हाथ से छूआ, परन्तु अभी भी उसकी चेतनाएं ऊहापोह की स्थिति में थी, और इस समय वह अपने लजीज खाने के राज को जानने के लिए बेताब था। "लेकिन माँ, पीतल के बने इस सस्ते जेवर से

इन बाओजियों—ऐसी लजीज बाओजियों, जिन्हें शायद ही मैंने कभी खाया हो—का क्या संबंध है? … मैं समझ नहीं पा रहा हूँ!”

“पीतल का जेवर! धत, धत, ऐसा नहीं कहते मेरे बच्चे! तुम नहीं जानते हो कि तुम क्या कह रहे हो। अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो, इस राज को जानने के बाद तुम्हारी आँखें खुली की खुली रह जायेंगी।”

श्रीमती वांग ने मिंग-ली को वह सब कुछ कह सुनाया जो घटित हुआ था, और जब उनकी कहानी पूरी हो गयी तो उन्होंने बची हुयी बाओजियों को बाओ और माओ के खाने के लिए जमीन पर डाल दिया। मिंग-ली ने अपनी माँ को पहले कभी इस प्रकार खाने को जमीन पर डालते हुए नहीं देखा था, इसकी वजह यह थी कि वे बहुत गरीब थे और कभी-कभार ही उनके पास अगले दिन के लिए खाना बचा करता था।

माँ-बेटे की जिन्दगी में अब खुशियों का एक शानदार दौर शुरू हो चुका था। माँ, बेटा, कुत्ता और बिल्ली—सभी अपने दिलों में संतुष्टि के साथ खुशी-ख़ुशी रहा करते थे। उनकी मांग पर उस अद्भुत छोटे भृंग से हर तरह के पकवान और नए

व्यंजन, जिन्हें उन्होंने कभी नहीं चखा था, उनके बर्तन से निकल आते थे। यो-जिआओ[6](油角), शंगजियन[7] (生煎), वनटुअन[8] (馄饨), जॉन्ग़्ज़ी[9](粽子), लाए चांग[10](臘腸) और भी न जाने कितने अनगिनत तरह के चाइनीज पकवानों को उन्होंने उस भृंग के जरिये मंगवाया था और उन पकवानों को खाकर उनका लुफ्त उठाया था। बहुत जल्द ही मिंग-ली ने अपनी पूरी ताकत अर्जित कर ली और पहले से कहीं ज्यादा तंदुरुस्त हो गया, लेकिन, मुझे यह बताते हुए झिझक होती है

---

[6] यो-जिआओ (油角)—यह देखने में भारत में बनाई जाने वाली गुझिया जैसा होता है। जब इसे नमक और मांस के साथ तैयार किया जाता है तो इसे 'शिन जिआओ ज़ाई' (咸角仔) कहते हैं और जब इसे चीनी और नारियल के साथ तैयार किया जाता है तो इसे 'टिन जिआओ जाई' (甜角仔) कहते हैं।

[7] शंगजियन (生煎)—यह शंघाई का विशेष पकवान है। यह तवे में तैयार की गयी एक छोटी बाओजी होती है। शंघाई में आमतौर पर लोग इसे नाश्ते के रूप में लेते हैं।

[8] वनटुअन (馄饨)—इसे आटा, अंडा, पानी और नमक मिलाकर तैयार किया जाता है।

[9] जॉन्ग़्ज़ी (粽子)—चिपचिपे चावल में तरह-तरह की चीजों को भरने के बाद बांस, नरकट या किसी लम्बी पत्ती से लपेटकर इसे उबालकर या भाप में पकाकर तैयार किया जाता है।

[10]लाए चांग (臘腸)—यह एक चीनी कबाब है, आमतौर पर सूअर के मांस को धुएं में पकाकर इसे बनाया जाता है, फिर इसे मीठा कर के इसमें गुलाब जल, चावल की शराब और सोये की चटनी मिलाते हैं।

कि इसके साथ ही साथ वह कुछ हद तक आलसी भी हो गया था, क्योंकि अब उसे काम करने की जरूरत नहीं रह गयी थी। और जहाँ तक सवाल उन दोनों जानवरों माओ और बाओ का है तो वे दोनों भी बहुत मोटे और चिकने हो गये थे और उनके बाल लम्बे और चमकदार हो गये थे।

लेकिन अफ़सोस! एक चीनी कहावत है : “बेइफंग ची इयांग, यू शे ची पांग[11](北風其涼，雨雪其雱。)” कहने का अर्थ है ‘जब उत्तरी हवा ठंडी होती है,तब भारी बारिश और बर्फबारी होती है। यानि दुःख सदैव खुशियों के पीछे-पीछे साए की तरह लगा रहता है। अब हुआ यह कि यह छोटा सा खुशहाल परिवार अपनी अच्छी किस्मत पर गर्व महसूस करने लगा और फिर इसने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को अपने यहाँ खाने पर आमंत्रित करना शुरू कर दिया, ये लोग अपने मेहमानों के सामने अपने अच्छे खाने का दिखावा करने लगे। एक दिन की बात है इन लोगों से मुलाकात करने के लिए

---

[11] बेइफंग ची इयांग, यू शे ची पांग (北風其涼，雨雪其雱。)— ‘जब उत्तरी हवा ठंडी होती है, तब भारी बारिश और बर्फबारी होती है’ कहने का अर्थ है दुःख सदैव खुशियों के पीछे-पीछे साए की तरह लगा रहता है।

इनके पारिवारिक मित्र श्रीमान लू अपनी पत्नी के साथ इनके घर पर आये। श्रीमती वांग का परिवार जिस शानदार जीवन शैली में रह रहा था उसे देखकर वे बहुत ज्यादा चकित हुए। श्रीमान लू और उनकी पत्नी ने सोचा था कि श्रीमती वांग के यहाँ उन लोगों को भिखारियों वाला खाना मिलेगा, लेकिन जिस उम्दा खाने को उन लोगों ने भरपेट खाया था वह उनकी सोच से परे था।

अपने खस्ता-हाल घर लौटते समय श्रीमान लू ने कहा, “ऐसा लजीज खाना मैंने शायद ही कभी अपनी जिन्दगी में खाया था।”

“हाँ, और मैं जानती हूँ यह लजीज खाना आया कहाँ से था।” श्रीमान लू की पत्नी ने जवाब देते हुए कहा, “मैंने विधवा वांग को खाना पकाने के बर्तन से सोने का एक छोटा जेवर निकालते हुए और उस जेवर को एक अलमारी में छिपाकर रखते हुए देखा था। यह जरूर कोई करामाती चीज है, क्योंकि मैंने देखा था जब वह खाना पकाने के लिए आग तेज कर रही थी उस समय वह खुद से बुदबुदा रही थी कि लजीज वनटुअन जल्दी से तैयार हो जाओ।”

“क्या कहा तुमने? ...करामाती चीज? आह! ऐसा क्यों होता है कि सारी खुशकिस्मती देवताओं ने दूसरों की किस्मत में ही डाली है? ऐसा लगता है कि हम अपनी सारी जिन्दगी बदनसीब के बदनसीब ही रहेंगे।”

“अरे, क्यों न हम श्रीमती वांग से कुछ दिनों के लिए, जब तक हमारी खड़खड़ाती हड्डियों के ढांचे पर थोड़ा मांस न चढ़ जाए, उनकी इस करामाती चीज को उधार मांग लें? बाद में ईमानदारी से हम इसे उन्हें वापस लौटा देंगे। यकीनन, देर-सबेर कभी न कभी हम इसे उन्हें वापस कर देंगे।”

“बेशक वे लोग इसकी बहुत अच्छी तरह से निगरानी करते होंगे। चूंकि उनके घर में सिर्फ एक ही कमरा है जो किसी भी तरह हमारे घर से बड़ा नहीं है, इसलिए उनसे इस सुनहरे जेवर को हासिल करना आसान नहीं होगा। और अब जब उन्हें काम करने की कोई जरूरत नहीं है, तब वे तुम्हें किस समय घर के बाहर मिलेंगे? क्योंकि यह बात तो सभी जानते हैं कि एक राजा के महल की तुलना में एक भिखारी के घर से कोई चीज चुराना हमेशा ही बहुत कठिन होता है।”

“यहाँ पर किस्मत हमारे साथ है,” श्रीमती लू ने ताली बजाते हुए उत्तेजना में चीखकर कहा, “आज ही वे लोग ‘टूडी गोंग ( 土地)’ के मंदिर में जाने वाले हैं। मैंने श्रीमती वांग को मिंग-ली से कहते हुए सुना था कि वह यह बात भूल न जाए कि आज दोपहर को उसे उनके साथ मन्दिर में जाना है। मैं चुपके से उनके घर जाती हूँ और उनकी इस छोटी सी, करामाती चीज को उस डिब्बे, जिसमें उन्होंने इसे छिपाया है, से निकाल कर ले आती हूँ।”

“क्या तुम्हें बाओ का भय नहीं है?”

“नहीं! वह कुत्ता खा-खाकर इतना मोटा हो गया है कि इधर-उधर लुढ़कने के सिवाय, वह कुछ नहीं कर सकता है। और यदि वह विधवा जल्दी ही वापस लौट आती है तो मैं उससे कह दूँगी कि मैं अपना झुमका खोजने के लिए वहां आई थी,जो शायद वहां गिर गया था।”

“ठीक है, जल्दी करो, लेकिन याद रखना वांग परिवार हमेशा से ही हम लोगों का अच्छा दोस्त रहा है, और यह भी कि, अभी-अभी ही हम उनके साथ दावत खाकर लौटे हैं इसलिए हम इसे सिर्फ उधार ले रहे हैं, न कि चुरा रहे हैं।”

बड़ी ही कुशलता से इस चालाक औरत ने अपनी योजनाओं को अंजाम दिया था। किसी ने भी उसे श्रीमती वांग के घर के अंदर जाते हुए नहीं देखा था। कुत्ते बाओ ने कोई आवाज नहीं की थी, और बिल्ली माओ ने अचरज से अपनी पलकों को केवल इसलिए झपकाया था ताकि वह उस अजनबी को देख सके जो घर पर आया था और फिर वह वापस जमीन पर सोने के लिए लेट गयी थी। जेवर को लेने के बाद श्रीमती लू ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर लौट आयी, और प्रसन्नतापूर्वक उसने अपने पति को यह सुनहरा भृंग दिखाया।

‘टूडी गोंग (土地)’ के मंदिर से लौटने के बाद श्रीमती वांग के घर पर शोर-शराबा और रोना-पीटना शुरू हो गया, क्योंकि मंदिर से आने के बाद गर्मागर्म रात्रिभोज के लिए जब श्रीमती वांग अपनी अलमारी से सुनहरे भृंग को निकालने के लिये गयीं तो उन्हें वह भृंग अलमारी में नहीं मिला। उन्होंने अपनी अलमारी के हर कोने की अच्छी तरह से दसियों बार तलाशी ली परन्तु उनके लिए यह यकीन कर पाना कठिन हो रहा था कि वह सुनहरा भृंग वहां उस अलमारी में मौजूद नहीं था, और फिर काफी देर तक विधवा श्रीमती वांग और उनका लड़का मिंग-ली खो चुके उस सुनहरे भृंग को पूरे कमरे में तलाशते रहे। सुनहरे भृंग की तलाश में पूरा कमरा इस तरह से अस्त-व्यस्त हो गया था मानो तूफ़ान ने आकर चीजों को इधर-उधर छितरा दिया था।

इसके बाद एक बार फिर से तंगी और बदहाली के दिन लौट आये, जिन्हें इस बार बिताना ज्यादा कठिन हो रहा था क्योंकि अभी हाल में ही गुजारे गये अच्छे दिनों और लजीज खाने की याद रह-रह कर उन्हें सताती थी। ओह, काश उन्हें ऐसे अच्छे खाने की लत न पड़ी होती! बासी और बचे हुए खाने को खाना कितना मुश्किल हो रहा था।

यदि विधवा और उसका बेटा अच्छे खाने के न मिल पाने की वजह से दुःखी थे तो उनके दोनों पालतू जानवर भी उनसे कम दुःखी नहीं थे। वे तो भुखमरी की कगार पर आ गये थे और सड़क की गलियों में फेंकी गयीं छिटपुट हड्डियों और फेंके हुए खाने की तलाश में भटकने लगे थे।

भुखमरी के कुछ दिन बीतने के बाद, एक दिन अचानक ही बिल्ली माओ उत्तेजित होकर उछलने लगी।

"आह, तुम्हें क्या हुआ?" गुर्राकर बाओ ने कहा, "क्या तुम भूख से पागल हो गयी हो, या किसी पिस्सू ने तुम्हें काट लिया है?"

"अभी मैं हम लोगों के हालातों के बारे में सोच रही थी, और अब मैं हम लोगों की परेशानियों के कारण को जान गयी हूँ।"

"क्या तुम सच कह रही हो?" खुश होते हुए बाओ बोला।

"हाँ, मैं वाकई जान गयी हूँ कि हमारी परेशानियों की वजह क्या है, जल्द ही तुम देखोगे कि तुम्हारी किस्मत किस तरह से मेरे पंजों में है!"

“अच्छा अब अपनी तारीफ़ करना बंद करो, और सीधे मुद्दे पर आते हुए मुझे बताओ कि हमारी परेशानियों की वजह क्या है?”

“सबसे पहले, तुम मुझे यह बताओ कि क्या तुम चाहते हो कि हमारे परिवार के खोये हुए अच्छे दिन वापस लौट आयें?” बिल्ली माओ ने कहा।

इस ख़ुशी में कि एक बार फिर से अच्छा खाना खाने को मिलेगा कुत्ते ने पूंछ हिलाते हुए कहा, “बेशक, यह भी कोई पूछने की बात है। निश्चित तौर पर! निश्चित तौर पर! उन अच्छे दिनों को वापस लाने के लिए मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूँ, तुम मुझे बताओ कि मुझे करना क्या होगा?”

“बहुत अच्छे! तो फिर मेरी बात सुनो। हमारी मालकिन के घर में एक चोर आया था जिसने हमारी मालकिन के सुनहरे भृंग की चोरी की। तुम्हें याद तो होगा कि किस प्रकार से मालकिन के बर्तन से हमारे लिए बढ़िया खाना निकला करता था? मैंने देखा था किस तरह से हमारी मालकिन एक छोटे सुनहरे भृंग को काले डिब्बे से निकालती थी और इसे बर्तन में डालती थी। एक दिन जब वह अपने हाथ में इस सुनहरे भृंग

को लिए हुए थी तब इसे दिखाते हुए उन्होंने मुझसे कहा था, 'देखो माओ, इस भृंग से ही हमारी सारी खुशियाँ हैं। क्या तुम नहीं चाहती हो कि यह तुम्हारा हो जाए?' इसके बाद वह हंसी थीं और फिर उन्होंने इसे वापस उस काले डिब्बे में बंद कर अलमारी में रख दिया था।"

"क्या सचमुच?" बाओ ने कहा, "तुमने इस बारे में पहले क्यों कुछ नहीं कहा?"

"तुम्हें वह दिन याद होगा जब श्रीमान लू अपनी पत्नी के साथ हमारे यहाँ आये थे, और फिर जब हमारी मालकिन श्रीमती वांग अपने लड़के मिंग-ली के साथ 'टूडी गोंग' के मंदिर गयी थीं उस बीच वह श्रीमती लू कैसे हमारे घर पर वापस आयी थी? मैंने अपनी आँख के ऊपर से अपनी पूँछ हटाकर उसे देखा था, वह अलमारी के पास गयी थी और उसने अलमारी में रखे काले डिब्बे से उस सुनहरे भृंग को निकाल लिया था। मैंने सोचा कि शायद उत्सुकता वश वह इसे देखने आई थी, लेकिन मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि वह एक चोरनी थी। हाय! मैं कितनी गलत थी! अगर मैं गलत नहीं सोच रही हूँ तो उसने ही इस सुनहरे भृंग को चुराया है,

और इस समय वह और उसका पति लू, दोनों उस शानदार भोजन को खा रहे होंगे जिस पर हमारा हक़ है।”

“चलो हम पंजे से उन पर हमला बोल देते हैं।” गुर्राकर बाओ ने अपने दाँत किटकिटाते हुए कहा।

“इससे कोई फायदा नहीं होने वाला है,” माओ ने आगे कहा, “अपने सुनहरे भृंग को वापस लाना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए और यही बात हमारे लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। बदला लेने का काम हम मनुष्यों पर छोड़ते हैं; बदला लेने के इस पचड़े में हमें नहीं पड़ना चाहिए।”

“तो तुम क्या सुझाती हो?” बाओ ने कहा, “तुम्हारी जो भी योजना हो मैं शुरू से आखिर तक हर कदम पर तुम्हारा साथ देने के लिए तैयार हूँ।”

“हम लू के घर चलते हैं और उस भृंग को लेकर वहां से भाग आते हैं।” बिल्ली ने कहा।

“अफ़सोस, मैं बिल्ली नहीं हूँ!”आह भरते हुए बाओ ने कहा, “यदि हम वहां जाते हैं तो मैं उनके घर के अंदर नहीं जा पाऊंगा, क्योंकि चोर अपने घरों के दरवाजों को बहुत अच्छी

तरह से बंद करते हैं। काश, मैं तुम्हारी तरह दीवार पर चल सकता। आज जिन्दगी में पहली बार मुझे तुमसे ईर्ष्या हो रही है कि मैं बिल्ली नहीं हूँ।"

"हम वहां साथ-साथ जायेंगे," अपनी बात आगे कहते हुये बिल्ली माओ ने कहा, "तुम अंजान जानवरों से रास्ते में मेरी रक्षा करना और फिर यू नदी[12] (伊河) पार करते समय मैं तुम्हारी पीठ पर सवार हो जाऊंगी, इसके बाद लू के घर पहुँचने पर मैं दीवार पर चढ़ जाऊँगी, और बाकी बचे काम को अंजाम दूँगी। बाहर खड़े होकर तुम मेरा इंतजार करना और फिर अपने सुनहरे भृंग के साथ तुम्हारी मदद से हम वापस अपने घर लौट आयेंगे।"
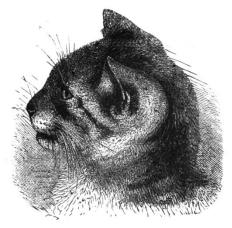
योजना बनने के बाद इसे अंजाम देने के लिए वे दोनों

12 यू नदी 伊河)—चीन के हेनैन प्रान्त में बहने वाली लुआ नदी (洛河) की सहायक नदी, यह लुआनचुआन सियन (栾川县) से होकर बहती है।

उसी रात मध्य रात्रि के समय अपने अभियान पर चुपचाप निकल पड़े। उन्होंने यू नदी(淠河) को वैसे ही पार किया जैसे बिल्ली ने सुझाया था, और नदी पार करते समय बाओ ने तैरने का भरपूर लुफ्त उठाया था, क्योंकि तैरते समय उसने बिल्ली को बताया था कि इस तरह तैरने से उसे अपने बचपन की यादें ताजा हो गयीं थीं, जबकि बिल्ली कुत्ते की पीठ पर इतनी सावधानी से बैठी थी कि एक भी बूँद पानी बिल्ली के चेहरे पर नहीं पड़ा था। नदी पार करने के बाद वे दोनों लू के घर पहुंचे।

"अब तुम यहाँ रुको और मेरे वापस आने का इन्तजार करो," बिल्ली माओ ने बाओ के कान में फुसफुसा कर कहा।

फुर्ती से उछलकर माओ मिट्टी की दीवार पर चढ़ गयी, और फिर कूदकर घर के अहाते में चली गयी। इस दौरान वह पूरी तरह से सतर्क थी और केवल उन जगहों पर सुस्ताती थी जहाँ आड़ अथवा अँधेरा होता था, उसके दिमाग में लगातार यह बात चल रही थी कि कैसे अपने काम को अंजाम दिया जाए, तभी एक हल्की खड़खड़ाहट ने उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, और एक चुस्त लम्बी छलांग से उसके पंजों

की पकड़ में एक मोटा चूहा आ गया जो अभी-अभी अपने बिल से बाहर पानी पीने के लिए निकला था।
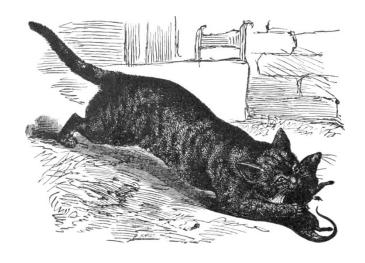
अब, यदि उस चूहे ने अपना मुंह न खोला होता तो माओ इतनी ज्यादा भूखी थी कि उस लुभावने मोटे चूहे को खाने में वह पल भर की भी देरी न करती। माओ हैरत में थी जब उस चूहे को उसने बिल्ली की भाषा में बात करते हुए सुना।

“अच्छी बिल्ली रानी, तुमसे विनती है, अपने पैने दांतों से इतनी जल्दबाजी मत दिखाओ! और अपने तेज पंजों को संभालो कहीं यह तुम्हारे इस सम्माननीय कैदी को चोट न पहुंचा दें? मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं यहाँ से नहीं भागूंगा।”

“भला एक चूहे का भी कोई सम्मान होता है?” माओ ने कहा।

“ज्यादातर चूहे इस बात को नहीं जानते हैं, लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ मेरा परिवार 'कॉन्ग चुआ'[13](孔丘) के घर पर रहा है, और वहां हम लोगों ने बुद्धिमत्ता की कई सारी बारीकियां सीखी हैं इसलिए हम लोग बाकी चूहों से अलग हैं। अगर तुम मुझे छोड़ती हो, तो मैं पूरी जिन्दगी तुम्हारा हुक्म मानूंगा, स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो मैं तुम्हारा गुलाम बन कर रहूँगा।”

इतना कहने के बाद चूहे ने फुर्ती से झटका देकर खुद को बिल्ली की गिरफ्त से आजाद किया, “देखो, अब मैं आजाद हूँ, लेकिन यह मेरे खुद के सम्मान की भावना है जो मैं अभी भी यहाँ ऐसे रुका हूँ मानो मैं बंधा हूँ, इसलिए अब मैं भागने की और कोई कोशिश नहीं करूंगा।”

“तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर यही

[13] कॉन्ग चुआ (孔丘)—चीन के महान विचारक और दार्शनिक जो विश्व में कन्फ्यूशियस के नाम से विख्यात हैं।

होगा,” घुरघुराते हुए माओ ने कहा, उसके बाल उत्तेजना में खड़े हो गये थे और उस मोटे चूहे का गोश्त खाने के लिए उसके मुंह में पानी आ गया था। “फिलहाल, मैं तुम्हारी आजमाइश करना चाहती हूँ, सबसे पहले तो तुम मुझे कुछ सवालों के जवाब दो फिर मैं तय करूंगी कि तुम पर भरोसा किया जाये या नहीं। अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम्हारे मालिक आजकल क्या खाना खा रहे हैं, कि तुम इतने तगड़े-गोलमटोल हो जब कि मैं इतनी दुबली-पतली हूँ?”

“ओह, अभी कुछ ही दिनों पहले हम लोगों की तकदीर बदली है, मैं तुम्हें बताता हूँ। मालिक और मालकिन सबसे बढ़िया खाना खाते हैं, और हम उनके पिछलग्गू उनके खाने के बचे-खुचे टुकड़ों को खाते हैं।”

“लेकिन यह तो एक गरीब आदमी की, कभी भी ढह कर गिर जाने वाली, झोंपड़ी है। ऐसे बढ़िया खाने को जुटा पाना उनके लिए कैसे संभव है?”

“इसके पीछे एक बहुत बड़ा राज है, लेकिन अपने सम्मान की खातिर मैं तुम्हें यह बात बताने के लिए बाध्य हूँ, मेरी

मालकिन को न जाने कैसे कोई करामाती चीज मिल गयी है..."

"उसने इसे हमारे घर से चुराया है," खिसियाते हुए बिल्ली ने कहा, "अगर मुझे मौका मिले तो मैं उसकी आँखें नोच लूं। अरे, उस भृंग के न होने की वजह से हम लोगों का परिवार भुखमरी की कगार पर आ गया है। तुम्हारी मालकिन ने इसे ठीक उसी दिन चुराया था जब हम लोगों ने उसे और उसके पति को हमारे घर पर खाने के लिए बुलाया था! श्रीमान चूहे, इस प्रकरण के बारे में तुम्हारी क्या राय है? क्या तुम्हारी मालकिन के पूर्वज भी किसी दार्शनिक के अनुयायी थे?"

"ओह, ओह, ओह! तो यह है सच्चाई!" चूहे ने विलाप करते हुए कहा, "तभी मैं कहूं कि उन लोगों को वह सुनहरा भृंग कैसे मिल गया था, और अब मैं और कुछ कहने की हिम्मत नहीं रखता हूँ।"

"नहीं, बिलकुल भी नहीं! तो फिर मेरी बात सुनो,मित्र चूहे—तुम उस सुनहरे भृंग को मेरे लिए वापस ला दो, बदले में मैं तुम्हें तुम्हारी सारी बाध्यताओं से आजाद कर दूंगी। क्या

तुम यह जानते हो कि इसे कहाँ छिपा कर रखा गया है?.. बोलो?”

“हाँ, इसे एक दरार में, जहाँ पर दीवार टूटी हुयी है, छिपा कर रखा गया है। मैं एक पल में तुम्हें वह लाकर दे दूंगा, लेकिन इसे देने के बाद हम लोग अपना खाना कैसे जुटाएंगे? हमारे पास खाने की कमी हो जाएगी, मुझे डर है कि हमारे मालिक और मालकिन के पास भीख मांगने के अलावा और कोई उपाय नहीं होगा।”

“अपनी अच्छी करनी की याद के सहारे तुम अपना जीवन यापन करना,” बिल्ली ने घुरघुराते हुए कहा, “एक ईमानदार भिखारी होना अपने आप में सम्मान की बात है। अब जल्दी जाओ! मैं तुम पर पूरी तरह से भरोसा करती हूँ, क्योंकि तुम 'कॉन्ग चुआ' के घर में रहे हो। तुम्हारे वापस आने तक मैं यहीं पर तुम्हारा इन्तजार करूंगी। आह!” खुद से मुसकुराते हुए माओ ने कहा, “जान पड़ता है कि किस्मत एक बार फिर से हम पर मेहरबान है।”
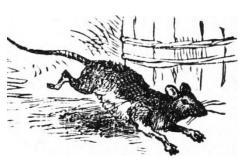
पाँच मिनट बाद, अपने मुंह में उस जेवर को दबाए हुए वह मोटा चूहा एक बार फिर से बिल्ली के सामने प्रकट हुआ। चूहे ने बिल्ली माओ को वह सुनहरा भृंग वापस लौटा दिया, और इसके बाद उसने बिल्ली से वापस जाने की इजाजत मांगी। चूहे का सम्मान तो सुरक्षित था लेकिन सुनहरा भृंग वापस मिलने के बाद माओ की चमकती हुयी हरी आँखों को देखकर चूहे को लगा कि कहीं बिल्ली अपने शब्दों से पलट न जाए और उसे अपना शिकार बना ले।

कई दिनों की भूखी माओ चाहती तो उस मोटे चूहे को दबोच लेती और अपनी भूख शांत कर लेती, लेकिन माओ ने अपनी भूख पर काबू रखते हुए चूहे को धन्यवाद दिया और लू के घर के बाहर खड़े बाओ के पास वापस लौट आयी।

“क्या वह सुनहरा भृंग तुम्हें मिला?” बाओ ने पूछा।

“मिल गया, अब चलो जल्दी से घर चलें।”

“हाँ,चलो चलें।”

इसके बाद वे दोनों वापस नदी पर पहुंचे और इस समय तक सूरज पर्वतों के पीछे से आसमान में उगना शुरू हो गया था।

कुत्ते बाओ की पीठ पर सवार होने के लिए बिल्ली जैसे ही तैयार हुयी, बाओ ने बिल्ली को सावधान करते हुए कहा, "सावधान रहना और अपने खजाने, इस सुनहरे भृंग, को संभाल कर मुंह में रखना। कम शब्दों में कहूं तो याद रखना, भले ही तुम एक औरत हो लेकिन जरूरी यह है कि तुम तब तक अपना मुंह बंद रखना जब तक हम नदी के दूसरे किनारे तक न पहुंच जाएँ।"

"बस-बस! रहने दो, मैं नहीं समझती हूँ कि मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत है," माओ ने भृंग को अपने मुंह के अंदर दबाते हुए कहा; और बाओ की पीठ पर सवार हो गयी।
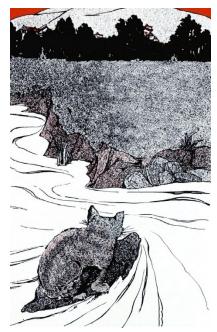
लेकिन अफ़सोस! जैसे ही वे दोनों नदी के दूसरे किनारे के करीब पहुंचे, उत्तेजना में एक क्षण के लिए माओ अपनी बुद्धिमत्ता को भूल गयी। अचानक ही एक मछली उछलते हुए बिल्ली माओ की नाक के नीचे से गुजरी। यह उस बिल्ली के लिए बहुत बड़ा प्रलोभन था। मछली को देखते ही बिल्ली के मुंह में पानी आ गया और उसका मुंह खुलते ही, जबड़े में अटका वह सुनहरा भृंग पानी में गिर गया और नदी के तल में चला गया।

“ये क्या कर दिया!” कुत्ते ने गुस्से से कहा, “मैंने तुमसे क्या कहा था? हम लोगों की सारी मेहनत बेकार हो गयी—और यह सब तुम्हारी बेवकूफी के कारण है।”

उस समय पानी में ही उन दोनों के बीच झगड़ा शुरू हो गया, और कुत्ते बाओ ने बिल्ली को कुछ बहुत ही ज्यादा बुरे अपशब्द कह दिए। बिल्ली ने बाओ को बताया कि भूखा रहने के बावजूद किस तरह से उसने श्रीमान लू के घर में मिले चूहे से सुनहरे भृंग को लाने के लिए समझौता किया था और भृंग मिलने पर अंततः कैसे उसने उस चूहे को जाने दिया था। बिल्ली माओ ने अपनी सफाई में यह भी कहा कि जब मछली की सुगंध उसकी नाक में गयी तो वह खुद को इसलिए नहीं

रोक पायी थी क्योंकि वह बहुत भूखी थी जिस वजह से उसके मुंह में पानी आ गया और उसका मुंह खुलते ही, जबड़े में अटका सुनहरा भृंग पानी में गिर गया। बिल्ली के सफाई देने के बावजूद कुत्ते का गुस्सा शांत नहीं हुआ और उसने बिल्ली को और भी ज्यादा अपशब्द सुनाये। कुत्ते के अपशब्दों से बिल्ली माओ को बहुत बुरा लगा और उसने तय किया कि वह कुत्ते द्वारा किये गये इस अपमान का बदला जरूर लेगी।
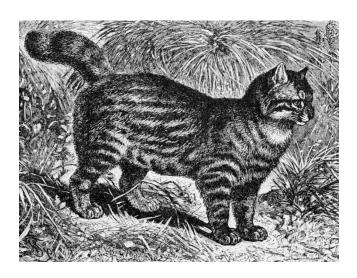
उन दोनों का झगड़ा चल ही रहा था कि वहां से एक मेढक गुजरा। उनके झगड़े को सुनने पर उसने कहा, “चिंता न करो मैं अभी नदी के तल में जाता हूँ और तुम्हारा वह सुनहरा भृंग लेकर आता हूँ।”

इतना कहकर वह मेढक तुरंत ही पानी में नीचे गया और नदी के तल से उस सुनहरे भृंग को लेकर ऊपर आ गया। भृंग को वापस लाने के लिए धन्यवाद देने के बाद, बाओ और माओ एक बार फिर से घर की तरफ चल पड़े।

घर पहुँचने पर बिल्ली ने फुसफुसा कर कहा, “मालकिन बहुत दुःखी हैं, मैं अंदर जाती हूँ और उन्हें खुश करती हूँ।”

इतना कहकर बिल्ली उछली और एक छोटी छेदनुमा खिड़की से घर के अंदर चली गयी।

उदास निगाहों से बाओ ने माओ को विदा किया। इस समय खाने की कमी से अधमरा होकर विधवा का लड़का मिंग-ली अपने बिस्तर पर अचेत पड़ा था, जबकि उसकी विधवा माँ, अपने झुर्री पड़े हाथों को आगे-पीछे मरोड़ते हुए विलाप कर रही थी और चीख-चीखकर कह रही थी कि कोई आकर उन लोगों की मदद करे।

“मैं यहाँ हूँ, मालकिन,” माओ ने आवाज निकालते हुए कहा, “और यह रहा आपका वह खजाना जिसके लिए आप रो रही थीं। मैं इसे छुड़ा कर वापस आपके पास ले आई हूँ।”

भृंग को देखते ही विधवा ख़ुशी से उछल पड़ी, उसने बिल्ली को अपनी गोद में उठा लिया और प्यार से चूमने लगी। इसके बाद भृंग की मदद से विधवा ने जल्दी से खाना बनाकर तैयार किया।

अपने लड़के को जगाते हुए विधवा ने कहा, "खाना तैयार है।...उठो अपनी बेहोशी से जागो! किस्मत एक बार फिर से हमारे पास वापस लौट आई है। अब हम भुखमरी से नहीं मरेंगे!"

आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि भृंग को वापस लाने के लिए बूढ़ी विधवा और उसके लड़के मिंग-ली ने उस बिल्ली की कितनी प्रशंसा की होगी, उन्होंने माओ को खाने के लिए बहुत सारी अच्छी-अच्छी चीजें तश्तरी में दीं, परन्तु इस बीच उन्होंने अपने वफादार कुत्ते बाओ के बारे में

एक भी शब्द नहीं कहा, जो घर के बाहर खड़ा स्वादिष्ट व्यंजनों की खुशबू सूंघ रहा था और उदास मन से घर के दरवाजे के खुलने का इन्तजार कर रहा था, बिल्ली माओ कुत्ते बाओ द्वारा कहे गये अपशब्दों को भूली नहीं थी, उसने एक बार भी बाओ का जिक्र नहीं किया कि इस सुनहरे भृंग को लाने में बाओ ने किस तरह से अपने हिस्से के काम को अंजाम दिया था।

अंततः जब उन लोगों ने अपने नाश्ते को कर लिया, तब माओ चुपचाप उछल कर उस छेदनुमा खिड़की से बाहर आई।

“ओह, मेरे प्यारे बाओ,” हंसते हुए माओ ने कहा, “तुम्हें घर के अंदर आना चाहिये था और देखना चाहिए था कि मुझे कितना अच्छा भोजन कराया गया! सुनहरे भृंग को देखकर मालकिन कितनी खुश हुयी थीं यह बात मैं बता नहीं सकती हूँ। और फिर उन्होंने मुझे कैसी बढ़िया-बढ़िया चीजें खिलाईं, वाकई मजा आ गया। मुझे तुम्हारे लिए अफ़सोस है बूढ़े साथी, कि तुम भूखे हो। मेरे ख़याल से अब तुम्हारे लिए यही अच्छा है कि तुम अपने खाने के लिए गली-गली घूमकर हड्डियों को ढूंढते फिरो।”

अपने साथी की इस शर्मनाक गद्दारी से क्रुद्ध कुत्ते बाओ ने बिल्ली माओ पर छलांग लगाई, और कुछ ही मिनटों में उसे मार डाला।

“जो कोई अपने दोस्त को भूलता है और अपने सम्मान को गंवाता है उसका यही अंजाम होता है,” बिल्ली के मृत शरीर के पास खड़े कुत्ते बाओ ने गुर्राकर कहा।

बिल्ली माओ को मरा हुआ देखकर श्रीमती वांग और उनके लड़के मिंग-ली ने बाओ को घर से भगा दिया।

बाओ, श्रीमती वांग के घर से तो चला गया लेकिन उसने अपनी जाति के अन्य कुत्तों को बिल्ली माओ की गद्दारी की कहानी सुनायी, और उस समय के सभी सम्मानित कुत्तों ने यह तय किया कि भविष्य में बिल्ली की जाति के सभी जीवों से वे लड़ते रहेंगे।

यही कारण है कि तब से बूढ़े बाओ के वंशजों—चाहे वह चीन में हों या दुनिया के किसी दूसरे कोने में—ने माओ की वंशज बिल्लियों और बाकी सभी बिल्लियों, के खिलाफ एक कभी न खत्म होने वाली जंग छेड़ दी। इस जंग को कुत्तों की कई पीढ़ियों ने लड़ा है और यह जंग आगे भी जारी रहे इसके

लिए वे माओ और बाओ की कहानी अपने बच्चों को सुनाते आये हैं और सुनाते रहेंगे।

***